संवाद दर्शन

सहयोग राशि-5/-

विक्रम संवत : 2082 | वर्ष : 2026

हिन्दी पाक्षिक

अंक : फरवरी (द्वितीय)

पद्मश्री सम्मान 2026

कहानी असम के मक्का क्रांति की

असम के ग्रामीण इलाकों के बीचो–बीच, एक शांत लेकिन शक्तिशाली क्रांति किसानों के जीवन को बदल रही हैकृजिसका नेतृत्व मशीनें या विशाल परियोजनाएं नहीं, बल्कि एक साधारण सुनहरा अनाज– मक्का कर रहा है। कभी मात्र 20,000 हेक्टेयर में छिटपुट रूप से उगाया जाने वाला मक्का अब विज्ञान आधारित ग्रामीण परिवर्तन में अग्रणी भूमिका निभा रहा है, जो राज्य में कृषि, आजीविका और उद्योग को नया रूप दे रहा है।

कहानी 2016–17 में शुरू हुई, जब आईसीएआर–भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान (आईआईएमआर), लुधियाना ने असम कृषि विश्वविद्यालय (एएयू), गोसाईगांव के सहयोग से प्रदर्शनों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक श्रृंखला शुरू की। लक्ष्य महत्वाकांक्षी थाकृयह परीक्षण करना कि क्या खरीफ की फसल कटाई के बाद खाली पड़ी भूमि पर रबी के मौसम में मक्का की अच्छी पैदावार हो सकती है।

वास्तविक सफलता 2023–24 में तब मिली जब विश्व बैंक और असम सरकार के सहयोग से, असम कृषि व्यवसाय और ग्रामीण परिवर्तन (।च।त्ज) परियोजना ने प्।त्–प्प्डत के साथ साझेदारी करके राज्य के 12 जिलों में मक्का को प्रमुखता दी।

इस कार्यक्रम के तहत सरकारी अधिकारियों के लिए 12 गहन प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए, जिसके बाद 520 से अधिक प्रगतिशील किसानों को व्यावहारिक मार्गदर्शन दिया गया, जिनमें से कई अनुसूचित जातिध्अनुसूचित जनजातिध्अन्य पिछड़ा वर्ग के थे। 3,200 से अधिक किसानों को बीज चयन, आधुनिक खेती पद्धतियों, कीट प्रबंधन, भंडारण और बाजार संपर्कों से संबंधित क्षेत्र स्तरीय तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त हुआ।

परिणाम अभूतपूर्व थे। किसानों ने औसतन 10.5 टन प्रति हेक्टेयर की उपज दर्ज कीकृयह आंकड़ा नीति निर्माताओं और उद्योग जगत दोनों का ध्यान आकर्षित करने में सहायक रहा। महत्वपूर्ण बात यह थी कि मक्का सिर्फ एक

अनाज नहीं थाकृयह दोहरे उद्देश्य वाली फसल थी, जो उच्च उपज वाला अनाज और पशुओं के लिए हरा चारा दोनों प्रदान करती थी।

बंजर खेतों से एथेनॉल के सपनों तक

असम में रबी मक्का की खेती का क्षेत्रफल अभूतपूर्व रूप से बढ़ा, जो 2022–23 में नगण्य स्तर से बढ़कर मात्र एक वर्ष में 39,000 हेक्टेयर हो गया। राज्य में कुल मक्का की खेती 2016–17 में 31,000 हेक्टेयर से बढ़कर 2023–24 में 1.04 लाख हेक्टेयर हो गई, जिससे उत्पादकता में 39ः की वृद्धि हुई और यह 5.14 टन प्रति हेक्टेयर तक पहुंच गई।

यह बदलाव सिर्फ भोजन से जुड़ा नहीं है, बल्कि ऊर्जा सुरक्षा से भी जुड़ा है। भारत सरकार द्वारा प्रतिदिन 1,025 किलोलीटर (ज्ञस्च्क) की कुल क्षमता वाले बायोएथेनॉल संयंत्रों को मंजूरी देने के बाद, असम को जल्द ही केवल एथेनॉल के लिए ही सालाना 10–12 लाख टन मक्का की आवश्यकता होगी। हालांकि, राज्य में वर्तमान में केवल 4–5 लाख टन मक्का का उत्पादन होता है, जो भोजन, पशु आहार और ईंधन की कुल 25 लाख टन से अधिक की मांग से बहुत कम है।

साधारण शुरुआत से लेकर राज्यव्यापी आंदोलन तक, असम की मक्का की कहानी नवाचार, दृढ़ता और सहयोग का अनुपम उदाहरण है।

संवाद दर्शन
हिन्दी पाक्षिक

सलाहकार संपादक
देवेन्द्र मिश्र

संपादक
संजीव कुमार

प्रकाशक एवं मुद्रक
बिमल कुमार जैन

प्रिंटर्स
लोकवाणी प्रिंटिंग प्रेस,
शशि काम्प्लेक्स,
नाला रोड, कदमकुआँ
पटना

पता
विश्व संवाद केंद्र
104-105, सूर्या अपार्टमेंट,
फ्रेजर रोड, पटना - 800 001
संपर्क = 0612 2216048

ई-मेल- vskpatna@gmail.com
vskbihar@gmail.com
वेबसाइट- www.vskbihar.com

अनुक्रमणिका

जनोपयोगी ....
बोध कथा 02
दिन विशेष 03
बजट..... 07
निर्णय..... 11
जयंती 10
संघ शताब्दी वर्ष और बिहार.....11
स्वास्थ्य 12
पर्व/त्यौहार 13
गौरवपूर्ण इतिहास 15
जिहाद 16

पाठकों के नाम पत्र

प्रिय पाठक,

सादर नमस्कार।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानंद होंगे। विदित हो कि 'संवाद दर्शन' पत्रिका राष्ट्र तथा प्रदेश की घटनाओं और महत्वपूर्ण बिन्दुओं को आधार बनाकर प्रकाशित हो रही है। आपका स्नेह हमेशा प्राप्त होता रहता है। पत्रिका द्वारा सदस्यों/ पाठकों के नाम, पता, दूरभाष तथा ई–मेल में सुधार के लिए योजना चलायी जा रही है। संवाद दर्शन परिवार आशा करता है कि पत्रिका आप तक पहुंच रही होगी। यदि नहीं पहुंच रही है तो आप हमारे दूरभाष पर संपर्क कर या हमारे पते पर पत्र लिखकर अपने पता का सुधार करवा सकते हैं।

शेष शुभ!

परोपकारी मयूर ध्वज

अश्वमेध यज्ञ कर रहे युधिष्ठिर का दिव्य अश्व मयूर ध्वज ने पकड़ लिया। यह जानकर कृष्ण–अर्जुन उनके राज्य पहुँचे। श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि मयूर ध्वज धर्मात्मा हैं और उनके सबसे बड़े भक्तों में से एक हैं। इसलिए मयूर ध्वज से युद्ध करते समय उन्हें सावधान रहना चाहिए। युद्ध में तो अर्जुन भी मयूर ध्वज का सामना नहीं कर पाए थे! तब स्वयं श्री कृष्ण सहायता के लिए आए।

मयूर ध्वज परमात्मा श्रीकृष्ण से युद्ध नहीं करना चाहता था, लेकिन क्षत्रिय–धर्म का पालन करते हुए युद्ध से पीछे नहीं हटा। इसलिए उन्होंने प्रत्येक बाण के लिए श्री कृष्ण नाम स्मरण किया। चूँकि भगवान को हमेशा अपने भक्तों के हाथों पराजित होना पसंद है, श्री कृष्ण स्वयं मयूर ध्वज के तीरों का सामना नहीं कर सके!!! जब अर्जुन ने पूछा तो श्री कृष्ण ने कहा, ''न तो तुम्हारा गांडीव और न ही मेरा सुदर्शन–चक्र इस महा–भक्त को नुकसान पहुंचा सकता है।'' श्रीकृष्ण सभी को मयूरध्वज की महिमा दिखाना चाहते थे। अगले दिन श्रीकृष्ण और अर्जुन ब्राह्मण का भेष बनाकर मयूरध्वज के पास गये।

ब्राह्मण को देखकर मयूर ध्वज ने कहा, "हे स्वामी! कृपया मेरा निवास स्वीकार करें और मुझे आशीर्वाद दें।" श्री कृष्ण ने उत्तर दिया, "राजा! हमारे पास इसके लिए समय नहीं है। एक बड़ी समस्या है। इसे हल करने के बाद ही हम अन्य बातों पर विचार कर सकते हैं।" मयूर ध्वज ने उत्तर दिया, "स्वामी! कृपया मुझे अपनी समस्या बताएँ। मैं इसे हल करने का पूरा प्रयास करूँगा। यदि आवश्यक हुआ तो मैं अपना प्राणदान करने के लिए भी तैयार हूँ।" विप्र–वेश में लीन श्री कृष्ण ने उत्तर दिया, "राजा! जब हम एक जंगल से गुजर रहे थे, तो एक बाघ ने मेरे पुत्र को पकड़ लिया और उसे खा गया। आधा खाने के बाद, आकाशवाणी ने कहा कि यदि मैं मयूर ध्वज का आधा शरीर लेकर बाघ को दे दूँ, तो मुझे मेरा पुत्र वापस मिल जाएगा। इसलिए मैं यहाँ आपसे पुत्र–भिक्षा माँगने आया हूँ।"

"आहा! मैं धन्य हो गया। मेरे शरीर का उपयोग एक नन्हे बच्चे का जीवन बचाने के लिए किया जा रहा है। मुझे और क्या चाहिए? आर्य! कृपया मत सोचो। मुझे दो भागों में काट दो और मेरे शरीर का आधा भाग बाघ को दे दो", मयूर ध्वज ने विनती की! उन्होंने तुरंत अपने भार्या और पुत्र को बुलाया और उनसे कहा कि उन्हें दो भागों में काटकर आधा–आधा दोनों ब्राह्मणों को दे दें। यद्यपि वे ऐसा नहीं करना चाहते थे, लेकिन यह जानते हुए कि राजा ने दिव्यकार्य करने के लिए ऐसा आदेश दिया है, उन्होंने उनके शरीर को काटना शुरू कर दिया।

कृष्ण–अर्जुन अनिमिष (आँखें न झपकाने वाले) बन गए और उन्होंने देखा कि मयूर ध्वज की बाईं आँख से जल की बूँदें गिर रही हैं। मयूर ध्वज की महानता को दूसरों को दिखाने के लिए, सर्वज्ञ श्री कृष्ण ने कहा, "राजा! जो पूर्ण मन से सृष्टि और संतोष के साथ दान करता है, वही त्याग कहलाता है। यदि आप दुखी हैं तो दान न करें। यदि आप दूसरों के दुख को देखकर आँसू बहाते हैं तो यह दिव्यत्व है। जबकि यदि आप स्वयं को देखकर आँसू बहाते हैं तो यह नैच्य है। इसका कारण मोह है। इसलिए यदि आपको अच्छा न लगे तो दान न करें।"

श्री कृष्ण के महाभक्त मयूर ध्वज ने उत्तर दिया, "आर्य! मुझे अपना शरीर दान करने का कोई दुःख नहीं है। यदि सचमुच दुःख होता तो मेरी दोनों आँखों से आँसू बहते। मेरे शरीर का दायाँ भाग केवल आर्त–रक्षा में व्यतीत हो रहा है, बायाँ भाग नहीं। यह भाग किसी काम का नहीं है, इसलिए व्यर्थ ही व्यर्थ जा रहा है। इसीलिए मेरी बाईं आँख से आँसू बह रहे हैं।"

तब श्री कृष्ण ने अपना निज–रूपम दिखाया, मयूरध्वज को आशीर्वाद दिया और अपना पिछला रूप लौटा दिया। मयूर ध्वज ने साष्टांग–प्रणाम किया और यज्ञ–अश्व लौटा दिया।

मयूर ध्वज ने सूक्ति 'परोपकारार्थम इदं शरीरम्' को प्रत्यक्ष कर दिखाया ।

संत परम्परा मलिका के शिरोमणि – संत रविदास जी

भारत में संतों की श्रेष्ठ परंपरा रही है। ऐसे संतों ने विदेशी शासन के अत्याचारों के विरुद्ध समाज को खड़ा किया और संबल प्रदान किया। उनके प्रयासों से सामाजिक समरसता का निर्माण हुआ है। ऐसे ही श्रेष्ठ संत परंपरा की मलिका के महान संत हुए संत शिरोमणि संत रविदास।

मृदु (स्वभाव, महान) विचार, आत्मानुभव, आत्मविश्वास और आत्मसम्मान के कारण उनके अंदर एक ऐसी प्रतिभा जाग्रत हो चुकी थी कि जो भी उनके संपर्क में आता था मंत्र–मुग्ध हो जाता था । वे सीधा–साधा जीवन व्यतीत करते थे। हाथ का कमाया खाना, थोडे में संतुष्ट रहना, सुख–दुःख में मन–स्थिति को समान रखना आदि उनके स्वभाव के अंग बन चुके थे।

सच्ची कमाई और सदाचार के साथ उपार्जित धन में से साधु–संतो की सेवा करना और दीन–हीन से प्रेम उनकी स्वाभाविक वृत्तियां थीं। वे कमल की भांति गृहस्थ रहते हुए भी संसार से निर्लिप्त रहते थे।

संत – स्वभाव के अनुरूप उन्होंने अपने से पहले आने वाले और समकालीन सभी सन्तों के प्रति सद्भावना प्रकट की है क्योंकि वैष्णव संप्रदाय में संत और वैष्णव जन की सेवा भगवान के बराबर मानी गई है। बचपन से ही उनकी साधु सेवा की ओर प्रवृत्ति थी । दृढ संकल्प, भगवान में अटूट भक्ति और विश्वास के कारण उनमें हीन भावना लेश मात्र भी नहीं थी। वह बिना संकोच के अपना पैतृक काम करते और भजन कीर्तन करते रहते थे। उन्होंने लोक–भाषा को माध्यम बनाया था। उनकी भाषा सरल और लोक ग्राह्य थी। उन्होंने गूढ़ से भावों को भी बड़ी सहज और सरल रीति से पेश किया था।

कवि होने के साथ–साथ रविदास जी क्रांतिकारी और मौलिक विचारक भी थे। उन्होंने लोक में जो कुछ परंपरागत प्रचलन देखा, उसको सत्य की कसौटी पर परिमार्जित किया। जो उन्हें ठीक लगा, उसका उन्होंने निर्भय होकर प्रचार किया।

रविदास स्वभावतः मानवतावादी थे। इसलिए भक्ति के द्वारा प्रज्ञा और चेतना की पूर्ण अधिकारिता के प्राप्त होने के बाद भी समाज की दीन–हीन अवस्था, दुर्दशा और भेद–भाव उनकी आंखों से ओझल नहीं हो सके थे। संत रविदास मूलतः भक्त थे कवि या साहित्यकार नहीं। वे एक अत्यंत विनीत, राग–द्वेष रहित, खंडन–मंडन प्रवृत्ति से विहीन, उच्च कोटि के संत, विचारक और कवि थे। उनकी वाणी भले ही सरल और सुबोध थी परंतु वह क्रन्तिकारी विचारों और उत्कट भक्ति–भावना से पूर्ण थी।

संत समाज ने भी संत रविदास के प्रति अपने विचार प्रकट किए। संत रविदास जी की भेंटवार्ता गुरुनानक जी से बनारस में हुई थी। कुछ विद्वान यह भेंट–वार्ता अयोध्या में मानते है। संत कबीर ने भी 'संतन में रविदास संत हैं' कहकर इनके प्रति श्रद्धा प्रकट की है। गुरुग्रंथ साहब में रविदास की प्रशंसा लिखी गई है, परंतु वह गुरु नानक द्वारा न होकर गुरु रामदास और गुरु अर्जुन द्वारा रचित है। रविदास चमा उस्तति करै हरि की रीति निमिख इक गाई पतित जाति उत्तम भया,चारि बरन पए पगि आई रविदास ध्याय प्रभु अनूप, गुरुदेव "नानक" गोबिंद रूप ।

(संदर्भ पुस्तक – संत रविदास , लेखक – इन्द्रराज सिंह)

स्वामी रामानन्द के शिष्य

पंचगंगा घाट के प्रसिद्ध संत स्वामी रामानन्द का शिष्य बनने की इच्छा भक्त रैदास के मन में जागी तो स्वामी रामानन्द ने इसे तुरन्त स्वीकार

कर लिया। भक्त रैदास ने कहा हम चमार हैं तो स्वामी रामानन्द ने कहा – ''प्रभु के यहाँ कोई छोटा–बड़ा नहीं होता।'' स्वामी रामानन्द ने रैदास को प्रभुराम की भक्ति करने तथा भजन लिखने का आग्रह किया। भक्तिभाव से पद लिखना, भक्तों के मध्य गाना, किन्तु जूते बनाने का अपना व्यवसाय भी करते रहना, यही उनकी दिनचर्या हो गयी।

भक्त रैदास कहते हैं कि सभी का प्रभु एक है तो यह जातिभेद जन्म से क्यों आ गया? यह मिथ्या है :

जांति एक जामें एकहि चिन्हा, देह अवयव कोई नहीं भिन्ना।

कर्म प्रधान ऋषि–मुनि गावें, यथा कर्म फल तैसहि पावें।

जीव कै जाति बरन कुल नाहीं, जाति भेद है जग मूरखाईं।

नीति–स्मृति–शास्त्र सब गावें, जाति भेद शठ मूढ़ बतावें।

अर्थात् ''जीव की कोई जाति नहीं होती, न वर्ण, न कुल। ऋषि–मुनियों ने वर्ण को कर्म प्रधान बताया है, हमारे शास्त्र भी यही कहते हैं। जाति भेद की बात, मूढ़ और शठ करते हैं। वास्तव में सबकी जाति एक ही है।'' संत रविदास कहते हैं कि संतों के मन में तो सभी के हित की बात ही रहती है।

वे सभी के अन्दर एक ही ईश्वर के दर्शन करते हैं तथा जाति–पाँति का विचार नहीं करते–

संतन के मन होत है, सब के हित की बात।
घट–घट देखें अलख को, पूछे जात न पात ।।

संत रैदास ने जातिगत भेदभाव की व्यवस्था को अपनी वाणियों में ही सहज ढंग से व्यक्त किया और लोगों को समझाया कि जन्मना कोई श्रेष्ठ या नीच नहीं होता । ओछे (छोटे) कर्म ही व्यक्ति को नीच बनाते हैं –

रविदास जन्म के कारनै, होत न कोऊ नीच।
नर को नीच करि डारि है, ओछे करम की कीच ।।

उनके विचार से जन्मना कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र नहीं है। ऊँची जाति का व्यक्ति वही है, जिसके कर्म अच्छे हैं –

ब्राह्मन् खत्तरी वैस सूद, रविदास जनम ते नाहिं।
जौ चाहइ सुबरन कउ, पावइ करमन माहिं।

संत रैदास को मुसलमान बनाने के प्रयास

संत रैदास को मुसलमान बनाने से उनके लाखों भक्त भी मुसलमान बन जायेंगे, ऐसा सोचकर धर्म परिवर्तन के लिए उन पर अनेक प्रकार के दबाव आये, किन्तु संत रैदास की श्रद्धा और निष्ठा अटूट थी। सदना पीर इनको मुसलमान बनाने आया था किन्तु इनकी ईश्वर–भक्ति और आध्यात्मिक–साधना से प्रभावित होकर सदना पीर हिन्दू होकर रामदास नाम से उनका शिष्य बन गया। जहां एक ओर तो वे जातिगत भेद, ढोंग, कर्मकांड आदि के विरोध में संघर्ष करते दिखते हैं वहीं दूसरी ओर वैदिक धर्म के दार्शनिक पक्ष में उनकी पूर्ण आस्था भी स्पष्ट दिखती है। सिकन्दर लोदी उनको मुसलमान बनाने के लिए प्रलोभन तथा दवाब दोनों की नीति अपनाता है। लोगों को उनके पास भेजता है। किन्तु उनका उत्तर सीधा–सपाट था। वे बार–बार हिन्दू धर्म में अपनी श्रद्धा, निष्ठा तथा आस्था व्यक्त करते हैं। उनकी

संत रविदास का जीवन परिचय

जन्म – माघ पूर्णिमा 1388 या 1398 ई., गोवर्धनपुरा (वाराणसी)
मृत्यु – 1528 ई., वाराणसी
उपनाम – रैदास
पिता – सन्तोरव दास
माता – कलसा देवी
गुरु – स्वामी रामानंद
शिष्या – मीराबाई
भक्ति – निर्गुण ब्रह्म की
जाति – चमार (जाटव)

कुछ विद्वान इनका जन्म 1377ई. तथा कुछ 1388ई. तथा कुछ विद्वान 1398ई. मानते हैं। रैदास ने साधु संतों की संगति से पर्याप्त व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त किया था।

दृष्टि तथा सोच स्पष्ट थी :

वेद वाक्य उत्तम धरम, निर्मल वाका ज्ञान।
यह सच्चा मत छोड़कर, मैं क्यों पहूं कुरान।
स्रुति–सास्त्र–स्मृति गाई, प्राण जाय पर धरम न जाई।
कुरान बहिश्त न चाहिए, मुझको हूर हजार।
वेद धरम त्यागूं नहीं, जो गल चलै कटार।
वेद धरम है पूरण धरमा, करि कल्याण मिटावे भरमा।
सत्य सनातन वेद हैं, ज्ञान धर्म मर्याद।
जो ना जाने वेद को, वृथा करे बकवाद।
(हमारे साधु संत, भाग– 1, पृ. 22–23)

जब धर्म परिवर्तन से इंकार करने पर सिकन्दर लोदी ने संत रैदास को कठोर दण्ड देने की धमकी दी तो उन्होंने निर्भीकता के साथ उत्तर दिया रू

मैं नहिं दब्बू बाल गँवारा, गंग त्याग गहूँ ताल किनारा।
प्राण तंजू पर धर्म न देऊँ, तुमसे शाह सत्य कह देऊँ।
चोटी शिखा कबहुँ नहिं त्यागँ, वस्त्र समेत देह भल त्यागँ।
कंठ कृपाण का करौ प्रहारा, चाहें डुबावो सिन्धु मंझारा॥

भक्ति रस की निर्मल गंगा

मुस्लिम आतंक के उस कठिन काल में भी संत रैदास ने भक्ति की निर्मल गंगा प्रवाहित कर दी। उन्होंने सैकड़ों भक्ति पदों की रचना की। वे उन पदों को भाव विभोर होकर गाते थे। वे अपने इष्ट को गोविन्द, केसव, राम, कान्हा, बनवारी, कृष्ण–मुरारी, दीनदयाल, नरहरि, गोपाल, माधो आदि विविध नामों से सम्बोधित करते हैं, किन्तु उनका ईश्वर मन्दिर में मूर्ति की तरह विराजित भगवान् से भिन्न है। वह तो घट–घट वासी निराकार ब्रह्म की सुन्दर प्रतीति है।

भक्त–रैदास कहते हैं कि राम के बिना इस जंजाल से मुक्ति कठिन है –

राम बिन संसै गांठिन छुटै।।
काम क्रोध मद मोह माया, इन पंचनि मिलि लुटे।

भक्त रैदास परमहंस की निस्पृह स्थिति में पहुँच गए थे। वे कहते हैं कि मैंने संसार के सब रिश्ते–नाते तोड़ दिये हैं, अब तो केवल प्रभुचरणों का ही सहारा है–

मैं हरि प्रीति सबनि सौं तोरी,
सब सौं तोरी तुम्हें संग जोरी।
सब परिहरि मैं तुमहीं आसा, मन बचन क्रम कहै रैदासा।।

भक्त रैदास के अभीष्ट राम हैं, सर्वव्यापी राम। उसी भक्ति के सहारे वे जीवन के सारे कार्य कर रहे हैं। उनके सभी कार्य राम को समर्पित हैं। उनका अपना कुछ भी नहीं, जो भी कुछ है वह राम का ही है–

राम नाम धन पायौ तार्थे , सहज करूँ व्यौहार रे।
राम नाम हम लादयौ ताथै, विष लाद्यौ संसार रे॥

भक्ति से ही तो प्रभु हैं। भक्ति वह मार्ग है जो धीरे–धीरे साधक को प्रभु से जोडता है और भक्त का अधिकार अपने प्रभु पर बढ़ता चलता है। भक्ति की पराकाष्ठा देखिये कि रैदास कह उठते है कि भगवान् आपकी सार्थकता के लिए हम आवश्यक हैं। भक्ति से परिपूर्ण रैदास अधिकारपूर्वक अपने प्रभु से जुड़े हुए हैं और कहते हैं रू

अब कैसे छूटे राम रट लागी।
प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी।

जाकी अंग–अंग बास समानी
प्रभुजी तुम घन वन हम मोरा।
जैसे चितवत चंद चकोरा
प्रभुजी तुम मोती हम धागा।
जैसे सोनहिं मिलत सोहागा।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा।
ऐसी भक्ति करै रैदासा ॥

अर्थात् ''राम नाम की जो रट लगी है वह कैसे और क्यों छूटेगी. यह निरंतरता कैसे टूटेगी, जब ध्यान है कि हम प्रभु की सार्थकता के लिए सार्थक हैं। प्रभुजी आप चन्दन हैं तो हम पानी हैं, हम आपके साथ मिलकर घिसेंगे तभी तो आपकी सुगन्ध सभी ओर फैलेगी। आप जल भरे मेघ हैं तो हम मोर हैं। हमारे नृत्य करने से ही तो आपकी शोभा होती है। आप चन्द्रमा हैं तो हम चकोर पक्षी हैं। चकोर की आँखें ही चन्द्रमा की शीतलता का अनुभव करती हैं। प्रभुजी आप दीपक हैं तो हम उसकी बाती हैं, बाती के बिना कैसे प्रकाश मड़ देगा दीपक? आप मोती हैं तो हम धागा हैं किन्तु बिना धागा प्रभु के गले का हार कैसे बनेगा? आप स्वर्ण हैं तो हम सुहागा हैं। हमारे बिना सोना चमकेगा कैसे? प्रभुजी आप स्वामी हैं और हम दास हैं।'' रैदास ने ऐसी भक्ति की है कि वह प्रभु के साथ एकरूप हो गए। यद्यपि पानी, बाती, धागा, सुहागा आदि मूल्यहीन हैं, किन्तु इनके बिना चन्दन, दीपक, मोती, स्वर्ण आदि अपना अस्तित्व नहीं बना पाते ।

संत रैदास प्रभु के साथ घुल–मिल गए, एकाकार हो गए। भक्त रैदास ने ऐसा सम्बन्ध जोड़ा कि प्रभु को यदि प्रभु बनना है तो भक्त रैदास साथ रहेंगे। एक पद में वे गाते हैं–

जो हम बाँधे मोह फाँस हम प्रेम बंधनि तुम बांधे।
पने छूटन को जतन करह हम छूटे तुम आराधे ॥

अर्थात 'हे माधव! यदि तुमने मुझे संसार के मोह में बाँध रखा है तो मैंने भी अपने प्रेम से बाँध रखा है। मैं तो तुम्हारी आराधना करके बंधन मक्त हो गया हूँ (मेरा भवपाश अवश्य कटेगा), परंतु अब प्रभु आप कैसे छूटोगे?

भक्त रैदास ने अपने जीवन में यह सिद्ध कर दिया कि त्याग, समर्पण और भगवद्भक्ति से व्यक्ति ऊँचा उठता चलता है और फिर उसकी जाति महत्वहीन हो जाती है।

काशी नरेश, झाली रानी तथा मीरा के गुरु भक्त रैदास

भक्त रैदास का भक्ति–भाव देखकर काशी नरेश उनके शिष्य बन गए। चित्तौड़ के महाराणा उदय सिंह की पत्नी झाली रानी संत रैदास की शिष्या हो गयीं। देशभर में प्रतिष्ठा प्राप्त, ऐश्वर्य, शक्ति–सम्पन्न चित्तौड़ की कुलवधू मीरा ने भी भक्त रैदास को ही अपना गुरु स्वीकार किया। कृष्ण भक्ति में आकंठ डूबी मीरा अनेक प्रकार का विरोध सहन करती हुई भक्त रैदास की शरण में आ गयीं। उन्हीं से मीरा ने आशीर्वाद पाया और भक्ति में लीन हो गईं। मीरा और भक्त रैदास का मिलन सगुण और निर्गुण भक्ति–धाराओं का मिलन तो है ही, साथ ही साथ जातिगत आधार पर भेद मानने वालों को एक सुन्दर अनुकरणीय सीख भी है।

जाति से कोई ऊँचे पद पर नहीं पहुँचा

यह शाश्वत सत्य है कि अपनी जाति के कारण किसी व्यक्ति ने इतिहास में अपना स्थान नहीं बनाया। स्वामी रामानन्द ने धन्ना (जाट), सेना (नाई), रैदास (चर्मकार), कबीर (जुलाहा) को शिष्य क्यों बनाया? मेवाड़ के राणा परिवार की वैभव सम्पन्न कुलवधू मीरा, काशी नरेश तथा झाली रानी ने संत रैदास को क्यों अपना गुरु बनाया? व्यक्ति को बड़ा बनाने का कार्य उसकी ईश्वर–भक्ति, विद्या, कर्मठता, चरित्र, श्रद्धा, उदारता, कर्तव्यपरायणता तथा मानवीय पहलू ही करते हैं, उसकी जाति नहीं। इसीलिए भक्त रैदास ने कहा है– जाति से कोई पद नहीं पहुंचा।

भारत को विकास की ओर ले जाने वाला बजट

—सुरेश रूगंटा

भारत के आर्थिक विकास की यात्रा केवल आंकड़ों और बजटीय घोषणाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र को जीवंत कथा है, जो निरंतर संघर्ष, नावाचार और आत्मविश्वास के सहारे वैश्विक मंच पर अपनी पहचान को मजबूत करते जा रहा है। केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा संसद में प्रस्तुत किया गया बजट केवल अगले वित्तीय वर्ष के आय–व्यय का वार्षिक लेखा–जोखा ही नहीं है, बल्कि यह देश की आर्थिक दिशा, सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्राथमिकता और भविष्य की संभावनाओं का रोडमैप है। आज भारत जब एक और तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था के रूप में विश्व मंच पर अपनी पहचान मजबूत कर रहा है तो दूसरी ओर वैश्विक अनिश्चितताओं, भू–राजनीतिक तनावों, जलवायु संकट और तकनीकी परिवर्तन की चुनौतियां से भी जूझ रहा है। ऐसे में विकासोन्मुखी यह बजट और अधिक अर्थपूर्ण हो जाता है। एक नागरिक से लेकर व्यापारी, उद्योगपति, किसान, श्रमिक, युवा और मध्यवर्ग सभी अपने–अपने दृष्टिकोण से बजट को देखते हैं, क्योंकि इसके आधार पर ही भविष्य की आर्थिक गतिविधियों का निर्धारण परिशुद्धता के साथ करना संभव हो सकता है।

लोगों की यह धारणा थी कि अगले कुछ माह के बाद पांच राज्यों में होने वाले विधान सभा चुनावों के कारण यह बजट चॉकलेटी होगा, लेकिन ऐसा कुछ नहीं दिखा। अलबत्ता, सरकार का पूरा जोर विकास की रफ्तार को स्थिर रखते हुए शिक्षा, रोजगार, नवाचार एवं आर्थिक सुधारों पर है। बुनियादी सरंचना पर 12.20 लाख करोड़ रुपए का भारी भरकम निवेश यह बताता है कि सरकार दीर्घकालीन विकास के लिए सड़क, रेल और माल ढुलाई को अपनी प्राथमिकता मानती है। यह निवेशकों के लिए एक सकारात्मक संकेत है।

बजट का सबसे बड़ा संदेश 'नवाचार' है। इसमें सेमीकंडक्टर मिशन 2.0, डिजिटल इंडिया और एआई के लिए विशेष प्रावधान किये गये हैं, जो भारत की अगली औद्योगिक क्रांति का नेतृत्व करेगा। 'बायोफार्मा शक्ति' और 'रेयर अर्थ मैग्नेट' जैसी पहल दिखाती है कि भारत अब भविष्य के उद्योगों में अपनी पकड़ मजबूत कर सहा है। रोजगार और कौशल विकास क्षेत्र में सरकार का दृष्टिकोण समयानुकुल है। स्कूलों में

किएटर लैब्स और डिजिटल रिकलिंग पर जोर, युवाओं को नये जमाने का प्रशिक्षण देकर, उन्हें केवल नौकरी खोजने वाला नहीं बल्कि डिजिटल उद्यमी बनाने का आकांक्षा रखता है। 2026–27 के बजट में भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था (औरेंज इकोनॉमी) को बड़े पैमाने को मानव पूंजी परियोजना के रुप में शामिल करना, नीति–दृष्टि में एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है।

2026 का यह आम बजट एक सुधारवादी बजट है, जो अगले दो माह बाद पांच राज्यों में विधानसभा के होने चाले चुनावों के बाद भी चुनावी चाशनी से अछूता है, बल्कि यह आर्थिक सुधारों की कोशिशों में ज्यादा नजर आता है। किसी भी सुधारवादी बजट की यह खासियत होती है कि उसे देखकर लगता है, इसमें कोई नया या बड़ा कदम नहीं उठाया गया। वास्तव में, आज भारतीय अर्थव्यवस्था में कदम बढ़ाने से ज्यादा जरूरी है, कदम जमाना। केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने बजट भाषण की शुरुआत जिन तीन कर्तव्यों की चर्चा से की है, वे गौर करने लायक है। पहला कर्तव्य अस्थिर वैश्विक परिस्थितियों के प्रति लचीलापन बढ़ाते हुए आर्थिक विकास को गति देना और उसे बनाए रखना। दूसरा अपने लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करना और उनकी क्षमता विकसित करना। तीसरा यह सुनिश्चित करना कि देश के प्रत्येक परिवार, समुदाय, क्षेत्र और वर्ग तक संसाधनों, सुविधाओं और अवसरों की पहुंच हो सके। ये घोषित कर्तव्य बिल्कुल स्पष्ट हैं, जिससे सरकार की नीयत एवं प्राथमिकताओं का पता चलता है। बजट यह साफ संकेत दे रहा है कि भारत अब रुकने वाला नहीं है। सबसे बड़ी बात यह है कि इस वैश्विक अस्थिरता के बुरे दौर में भी भारतीय अर्थव्यवस्था बेहतर प्रदर्शन कर रही है।

वर्ष 2026 के बजट को किसी भी दृष्टिकोण से देखिए वह विश्वसनीय, जिम्मेदार और दूरदर्शी नजर आयेगा। रविवार को पेश हुए केन्द्रीय बजट में खास यह

है कि व्यापार और उद्योग को विकास के एक प्रमुख चालक (इंजन) के रूप में दिखाया गया। 7 प्रतिशत की विकास गति को कायम रखने के लिए विनिर्माण और पूंजीगत खर्च, जिसे अवसंरचना (इन्फास्ट्रकर) पर होने खर्च के नाम से भी जानते हैं, पर खास जोर दिया गया है। विनिर्माण को बढ़ावा देने से घरेलू स्तर पर वस्तुओं का निर्माण बढ़ेगा, जिससे निवेश और रोजगार में बढ़ोत्तरी के साथ आयात में कमी आयेगी तथा निर्यात बढ़ाने के पर्याप्त अवसर मिलेंगे। वैश्विक हालात को देखते हुए घरेलू अर्थव्यवस्था को मजबूत रखना बड़ी जरूरत बन गयी है। यही कारण है कि विनिर्माण के लिए सात ऐसे क्षेत्रों का चुनाव किया गया है जो रोजगारपरक हैं और जिन्हें भारत अब भी बड़ी मात्रा में आयात करता है। सात सेक्टरों में बायोफार्मा, सेमीकंडक्टर, इलेक्ट्रॉनिक्स क्ल–पूजे, रेयर अर्थ, रसायन/केमिकल, भारी मशीनें (कैपिटल गुड्स) और कपड़ा (टेक्सटाइल्स) को शामिल किया गया है। बायोफार्मा, इलेक्ट्रॉनिक्स कंपोनेंट्स, रेयर अर्थ एवं पूंजीगत सामानों का भारत बड़ी मात्रा में आयात करता है। टेक्सटाइल और केमिकल में फोकस करने पर भारत इनका एक बड़ा निर्यातक बन सकता है।

सरकार ने बजट में लघु और मध्यम उद्योगों को विजेता (चैंपियन) के रूप में विकसित करने की घोषणा की है। छोटे एवं मध्यम स्तर की इकाइयों के उन उत्पादों को प्रोत्साहित किया जायेगा, जिनकी विक्री वैश्विक स्तर पर की जा सकती है। यह एमएसएमई के लिए फायदेमंद होगा। आर्थिक विकास एवं रोजगार के लिहाज से भी कुछ सेक्टरों में ऐसे एमएसएमई की पहचान होगी और उन्हें आर्थिक व अन्य प्रकार की मदद दी जाएगी। लघु एवं मध्यम उद्योग के प्रोत्साहन के लिए 10 हजार करोड़ रुपए से एमएसएमई ग्रोथ फंड की स्थापना की जाएगी। इसके अलावा एमएसएमई को आर्थिक मदद के लिए आत्मनिर्भर भारत मिशन में 2000 करोड़ रुपए की राशि आवंटित की जायेगी। देश के निर्यात में 45 प्रतिशत से अधिक हिस्सेदारी एमएसएमई की है। बजट में सरकार ने सैकड़ों उन कच्चे मालों पर लगने वाले आयात शुल्क को या तो कम कर दिया है या फिर इसे पूरी तरह से समाप्त कर दिया है, जिससे लागत कम होने से निर्यात बढ़ेगा तथा घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहन मिलेगा। उपभोक्ता को अब कई इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएं सस्ते दामों पर उपलब्ध होगी। सरकार ने निर्माण को प्रोत्साहन देने के लिए आयात नियम को भी सरल कर दिया है। जैसे, अब विदेश से कच्चा माल मंगाने पर उन्हें हासिल करने के लिए सीमा शुल्क अधिकारियों की मंजूरी की जरूरत नहीं होगी। बजट में कंटेनर निर्माण के लिए 10 हजार करोड़ रुपए के कंटेनर उत्पादन योजना की घोषणा की गई है। इसी तरह से बजट में टनल बोरिंग मशीन, लिफ्ट, फायर फाइटिंग उपकरण, मेटो और हाई एल्टीट्यूड रोड निर्माण में इस्तेमाल होने वाली मशीनरी को घरेलू स्तर पर बनाने के लिए अलग–अलग घोषणाएं की गयी हैं।

इस बार केन्द्रीय बजट में बिहार के हिस्से में सात बड़ी चीजें आयी हैं। पहला देश के सात हाईस्पीड रेल कॉरिडोर में से एक वाराणसी–सिलीगुड़ी कॉरिडोर का अधिकांश हिस्सा बिहार से होकर ही गुजरेगा। बिहार में इसका संभावित रूट बक्सर से किशनगंज होगा। इससे लंबी दूरी की यात्रा बेहद कम समय में पूरी हो सकेगी। ऐसे में इस हाईस्पीड रेल कॉरिडोर से बिहार के लोगों को विशेष लाभ मिलेगा। इस बजट में बिहार को दूसरी बड़ी सौगात पटना में जहाज मरम्मत केन्द्र के रूप में मिली है।

इससे पटना जलमार्ग का एक बड़ा केन्द्र बनकर उभरेगा, साथ ही इससे बिहार में मरीन इंजीनियरिंग और तकनीको क्षेत्र में स्थानीय युवाओं के लिए कौशल विकास और नये रोजगार के अवसर पैदा होंगे। इसके अलावा बिहार में पांच लाख से अधिक आबादी वाले आठ शहर को बुनियादी सुविधाओं के विकास के लिए अतिरिक्त केन्द्रीय सहायता मिलेगी। इससे इन शहरों में आधारभूत सुविधाओं के विकास में मदद मिलेगी। राज्य के सभी 38 जिलों में छात्राओं के लिए छात्रावास खोले जायेंगे। बजट में परमाणु बिजली संयंत्र के लिए आयात होने वाले सामानों पर सीमा शुल्क में छूट जारी रखने का फैसला लिया गया है। इससे बिहार में लगने वाले परमाणु संयंत्र को इसका फायदा मिलेगा। पूर्वोत्तर राज्यों के लिए 4 हजार ई–बसों का प्रावधान बजट में किया गया है, इसका भी लाभ बिहार को मिलेगा। केन्द्रीय बजट में पुराने औद्योगिक कलस्टरों को पुनर्जीवित करने की योजना है। इससे बिहार के कई पुराने औद्योगिक कलस्टरों को लाभ होगा। बिहार को वित्त वर्ष 2026–27 में केन्द्रीय करों के विभाज्य कोष से हिस्सेदारी के रूप में चालू वित्त वर्ष की तुलना में 13,316 करोड़ रुपए अधिक मिलेगे। बिहार के लिए वर्ष 2026–27 में 1,51,831 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है, जबकि वित्त वर्ष 2025–26 में यह राशि 1,38,515 करोड़ रुपये थी। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि यह बजट ग्रामीण विकास के लिए समर्पित है, अब विकास का लाभ केवल शहरों तक सीमित नहीं रहेगा।

(लेखक आर्थिक मामलों के विशेषज्ञ हैं)

सार्वजनिक कार्यक्रमों में राष्ट्रगान से पहले 'वंदे मातरम' गाना होगा अनिवार्य

हाल में केंद्र सरकार ने एक महत्वपूर्ण आदेश जारी किया है, जिसके मुताबिक अब सभी स्कूलों एवं सार्वजनिक जगहों पर राष्ट्रगान से पहले राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' को गाना एवं सुनना अनिवार्य है। यही नहीं राष्ट्रगीत के दौरान सभी लोगों को सावधान मुद्रा में भी खड़ा होना होगा। क्या कहता है वंदे मातरम का नया नियम, आइए जानते हैं।

केंद्रीय गृह मंत्रालय की आधिकारिक अधिसूचना के मुताबिक अब सभी स्कूलों, आधिकारिक अवसरों और भाषण के दौरान 'जन–गण–मन' से पहले भारतीय राष्ट्रगीत श्वंदे मातरमश को बजाना और इसके सम्मान में खड़ा होना अनिवार्य है। नए प्रोटोकॉल के अनुसार अब राष्ट्रगान से पहले राष्ट्रगीत को बजाया जाएगा। नियमों के मुताबिक अब राष्ट्रगीत के छह अंतरे गाए जाएंगे, जिसकी अवधि 3 मिनट 10 सेकंड निर्धारित की गई है।

दरअसल भारतीय राष्ट्रगीत की रचना महान साहित्यकार 'बंकिम चंद्र चटर्जी' द्वारा 07 नवंबर, 1875 को थी। इस गीत को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान देशभक्ति का प्रतीक माना जाता था। आजादी के बाद यानी 1950 में इस गीत को भारतीय राष्ट्रगीत के रूप में मान्यता दी गई थी, हालांकि 'वंदे मातरम्' के केवल दो श्लोकों को ही राष्ट्रगीत घोषित किया गया था।

चर्चा में क्यों 'वंदे मातरम'

केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा हाल ही में 'वंदे मातरम्' के संदर्भ में नए नियम लागू किए गए हैं, जिसके मुताबिक अब 'जन–गण–मन' से पहले 'वंदे मातरम्' को गाना एवं बजाना अनिवार्य है। वंदे मातरम को गाने और सुनने वाले व्यक्ति को सावधान मुद्रा में खड़ा होना होगा। नए आदेश की अनुसार अब सभी सरकारी स्कूलों में दिन की शुरुआत भारतीय राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' से ही होगी। साथ ही अब से 'वंदे मातरम्' के छह अंतरे गाए जाएंगे, जिसकी अवधि 3 मिनट 10 सेकेंड है।

किन अवसरों पर गाया जाएगा राष्ट्रगीत

नए नियमों के अनुसार भारतीय राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' को तिरंगा फहराते हुए, राष्ट्रध्वज को परेड में लाने के दौरान, किसी समारोह या कार्यक्रम में राष्ट्रपति के सम्मान पर, राज्यपाल और उपराज्यपाल के समारोह पर, पुरस्कार समारोह जैसे भारत रत्न, पद्म भूषण, पद्म विभूषण में गाया जाएगा।

कहां लागू नहीं होगा नया नियम

नए नियमों के मुताबिक 'वंदे मातरम्' राष्ट्रगीत को सिनेमा हॉल में गाया व बजाया नहीं जाएगा। इसके साथ ही अगर किसी डॉक्यूमेंट्री या फिल्म स्क्रीनिंग के दौरान वंदे मातरम बजाया जाता हैं, तो लोगों को सावधान मुद्रा में खड़े होने की भी आवश्यकता नहीं होगी। क्योंकि इससे दर्शकों का देखने का अनुभव बाधित हो सकता है।

गणतंत्र दिवस पर 'वंदे मातरम्' थीम

इस साल यानी 26 जनवरी, 2026 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर परेड की विशेष थीम 'वंदे मातरम्' पर रखी गई थी। कर्तव्य पथ पर श्वंदे मातरमश पर एक सुदंर झांकी भी निकाली थी। बता दें, संस्कृति मंत्रालय ने 'वंदे मातरम्' के पूरे 150 साल होने के उपलक्ष्य पर यह झांकी प्रस्तुत की थी। साथ ही इस झांकी को उत्कृष्ट झांकी का पुरस्कार भी मिला था।

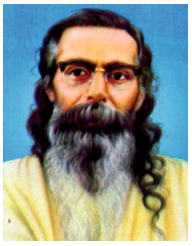

सामाजिक समरसता के लिए सेवा

सामाजिक समरसता के संदर्भ में सेवाकार्य का योगदान अनन्य साधारण है। समाज में कई प्रकार के सेवा के कार्य चलते रहते हैं। उनकी प्रेरणा भी भिन्न–भिन्न प्रकार की रहती है। अनेक सेवाकार्य पुण्य संचय के हेतु से होते हैं। किसी सेवा कार्य की प्रेरणा भूतदया होती है। कई लोग प्रसिद्धि पाने के लिए सेवा कार्य करते हैं। किसी को सेवाकार्य से चरितार्थ चलाना होता है। इसलिए सेवा कार्य करते रहते हैं। अन्य कोई राजनीति में प्रवेश पाने के लिए सेवाकार्य को एक माध्यम समझते हैं। श्री गुरुजी ने सेवा का एक अतिव्यापक दृष्टिकोण सब के सामने रखा है।

श्री गुरुजी के व्यक्तित्व तथा सोच पर स्वामी विवेकानंद जी के विचारों का गहरा प्रभाव था। स्वामी विवेकानंद जी ने "दरिद्र नारायण' शब्द दिया है। दरिद्र आदमी में नारायण का वास है, ऐसा मान कर शिवभाव से जीव की सेवा करनी चाहिए। श्री गुरुजी इसी मार्ग पर चलने वाले एक साधक थे। वे कहते हैं, "जितने दीन–दुखी मिलें, वे सब भगवान के स्वरूप हैं और इस प्रकार भगवान ने अपनी सेवा का अवसर हमें प्रदान किया है, ऐसा समझें और इस भाव से उनकी प्रत्यक्ष सेवा करने के लिए उद्यत हों।

आज समाज में दुःख दैन्य प्रचुर मात्रा में है। एक तरफ ऐसा समाज का वर्ग है, जिसके पास साधन संपत्ति की कमी नहीं तो दूसरी जगह ऐसा वर्ग है जो सर्वथा निर्धन है। एक समय का पेट भी भर नहीं पाते। ऐसे बंधुओं का श्री गुरुजी को अहोरात्र स्मरण रहा करता था। किसी एक कार्यकर्ता ने बड़ी आत्मीयता से श्री गुरुजी को शुद्ध घी का एक डिब्बा भेज दिया और लिखा कि शरीर स्वास्थ्य के लिए रोज शुद्ध घी खाना चाहिए। उसको पत्र में श्री गुरुजी लिखते हैं कि अपने देश में करोड़ों बंधुओं को एक समय का भोजन तक नहीं मिलता, ऐसे में रोज शुद्ध घी खाना मेरे लिए संभवनीय नहीं है। इसी कारण श्री गुरुजी केवल एक समय ही भोजन करते थे। समरसता का इससे बढ़कर श्रेष्ठ आचरण और कौन सा हो सकता है?

भूखे, प्यासे, बीमार दिखते हैं। उनका स्मरण रखते हुए श्री गुरुजी कहते हैं, "इस स्थिति में हम सब ऐसा प्रयत्न करें कि मनुष्य को भूखा नहीं रहने देंगे। प्रत्येक को ऐसा समझना है कि किसी एक पीड़ित बंधु का भार उसके ऊपर ही है।" अपना सच्चा धर्म क्या है, इसका भी बार–बार उन्होंने स्मरण कराया है। "समाज की ओर दुर्लक्ष करना अपना धर्म नहीं। कई बार लोग धार्मिक बनने का अर्थ विचित्र सा लगा लेते हैं। वे त्रिपुंड लगाते हैं, चंदन लगाते हैं, घंटी बजा–बजाकर लंबी–चौड़ी पूजा करते हैं, परंतु समाज का ध्यान नहीं लगाते। यह सब धर्म नहीं, यह तो धार्मिक बनने का आभास उत्पन्न करना मात्र हुआ। हमारा सच्चा धर्म तो यही है कि यह समाज अपना है, अतः हम इसका चिंतन करें और हर एक आदमी स्वयं–भू पोषण कर सके, ऐसा स्वाभिमान उसमें निर्माण करें।" (श्री गुरुजी समग्रः खंड ५, पृष्ठ ३६)

नर को भगवत्स्वरूप मानकर उसकी सेवा करनी चाहिए, यह श्री गुरुजी का कथन था। सेवा के माध्यम से क्या होना चाहिए, इसको स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं – "समाज को स्वत्वसंपन्न, उत्कर्षमय, स्वाभिमानी बनाना है। समाज की सुरक्षा के लिए प्रयत्न करना है। इसलिए आवश्यक है कि अपने सब बंधुओं को इन विकृतियों से दूर रखकर, हम सच्ची, हार्दिक तथा आत्मीयतापूर्ण एकता उत्पन्न करें। अंतःकरण की आत्मीय भावना थोथी नहीं, सच्ची होनी चाहिए। मुँह में कुछ और मन में कुछ ऐसी दिखावटी सहानुभूति नहीं चाहिए। समाज के प्रत्येक बंधु के लिए हृदय में खरी आत्मीयता का भाव आवश्यक है"। (श्री गुरुजी समग्रः खंड ३, पृष्ठ २४६)

दूसरे शब्दों में समाज में समरसता लाने के लिए अपने मन का भाव कैसा होना चाहिए, इसको श्री गुरुजी ने परिभाषित किया है। सामाजिक समरसता यह मन का गुण है, आत्मीयता के बिना वह उत्पन्न होना संभव नहीं। इसलिए हम देखते हैं कि श्री गुरुजी बार–बार आत्मीय भावना का स्मरण दिलाते हैं।

बिहार के पहले प्रचारक काशीनाथ मिश्र

सुखदेव झा जी काशी में जंगमबाड़ी शाखा के स्वयंसेवक थे। 1938 में जो तीन कार्यकर्ता गयाजी में संघ कार्य के विस्तार के लिए आए थे, उनमें एक सुखदेव झा भी थे। वैसे उनका घर गयाजी जिला में ही था। उन्होंने गयाजी में शाखा का कार्य बढ़ाने में काफी परिश्रम किया था। सुखदेव झा जी 1940 में अपनी बहन के घर दरभंगा आए हुए थे। यहां उनका परिचय राज हाई स्कूल के छात्र काशीनाथ मिश्र जी से हुआ।

सुखदेव जी ने काशीनाथ जी को संघ कार्य के बारे में बताया तो उन्होंने तुरंत अपनी सहमति दे दी। जब 1940 में संघ शिक्षा वर्ग के लिए नागपुर जाने की बात आई तो धन संकट सामने आ गया। इसके समाधान के लिए सुखदेव जी के साथ काशीनाथ जी दरभंगा महाराज से मिले। सुखदेव झा ने काशीनाथ मिश्र को नागपुर ओटीसी में जाने के लिए आर्थिक सहायता देने की प्रार्थना की। महाराज ने पूछा कि काशीनाथ मिश्र नागपुर से आकर क्या करेंगे तो सुखदेव झा ने कहा, ष्नागपुर से आकर श्री मिश्र दरभंगा में संघ की शाखा प्रारंभ करेंगे और छात्रों को सैनिक शिक्षा देंगे।ष यह जानकर दरभंगा महाराज ने काशीनाथ मिश्र को नागपुर के 1940 के ओटीसी में जाने का सारा खर्च दिया। ओटीसी से लौटने के बाद 21 जून, 1940 में राज हाई स्कूल के टेक्निकल स्कूल मैदान में संघ की शाखा प्रारंभ हुई। राज हाई स्कूल के जो छात्र मिर्जापुर के छात्रावास में रहते थे उन्हीं को लेकर संघ की शाखा प्रारंभ हुई थी। काशीनाथ मिश्र बिहार प्रदेश के रहने वाले प्रथम प्रचारक थे।

काशीनाथ मिश्र जी का जन्म 21 सितंबर, 1921 को अनंत मिश्र जी के घर हुआ था। काशीनाथ जी का पैतृक घर मधुबनी के लालगंज थाना के भैरव स्थान में था। पूज्य डॉ. हेडगेवार जी के मृत्यु के पश्चात प्रचारक बने। सर्वप्रथम भागलपुर का कार्य मिला। तत्पश्चात दरभंगा के विभाग प्रचारक रहे। उस समय दरभंगा में 40 शाखाएं लगती थी। प्रथम प्रतिबंध के समय पूरे समय भूमिगत रहकर कार्य किया। उस समय पुलिस ने धोखे से इनके बहनोई काशीनाथ झा को गिरफ्तार कर लिए था, जो लोहान निवासी थे। बाद में संघ की योजना से इन्हें लखनऊ भेजा गया। उन्होंने लखनऊ में पाञ्चजन्य पत्रिका के प्रारंभिक समय में पूज्य दीनदयाल जी और पूज्य अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ मिलकर कार्य किया। उन दिनों तीनों एक ही कमरे में रहते थे। इन्होंने 1952 में झंझारपुर से जनसंघ के टिकट पर विधानसभा चुनाव भी लड़ा। लेकिन इनको राजनीति रास नहीं आई। 1977 में दरभंगा राज की महारानी अधिश्वरी कामसुंदरी ने इन्हें धार्मिक न्यास का मैनेजर बनाया परंतु वहां की उठापटक के कारण 3 वर्षों में ही उन्होंने इस्तीफा दे दिया। 1980 में बड़ी महारानी के नाम पर राजलक्ष्मी सरस्वती शिशु मंदिर, दरभंगा की स्थापना की।

काशीनाथ मिश्रा जी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्ति थे। वे कलाकार, साहित्यकार, नाटककार और कला निर्देशक भी थे। उनके श्ओजस्वीश और श्दिग्विजयश नाटक को काफी प्रसिद्ध मिली। कड़क–मिजाजी, अक्खड़ और अनुशासनप्रिय काशीनाथ जी 10 दिसंबर, 1991 को इस नश्वर संसार से विदा हुए।

स्वस्थ हृदय – स्वस्थ जीवन की नींव

–डा. अनिल कुमार श्रीवास्तव

पिछले कुछ वर्षों में हृदयाघात के मामलों में चिंताजनक वृद्धि देखी गई है। यह बीमारी अब केवल उम्रदराज लोगों तक सीमित नहीं रही, बल्कि युवा वर्ग भी इसकी चपेट में तेजी से आ रहा है। बदलती जीवनशैली, मानसिक तनाव और असंतुलित दिनचर्या इसके प्रमुख कारण माने जा रहे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, यदि समय रहते सावधानी न बरती जाए तो आने वाले वर्षों में यह समस्या और गंभीर रूप ले सकती है।

प्रमुख कारण

आधुनिक जीवन ने सुविधाएँ तो बढ़ाई हैं, लेकिन इसके साथ कई स्वास्थ्य जोखिम भी सामने आए हैं।

लगातार मानसिक तनाव – काम का दबाव, आर्थिक चिंता और सामाजिक तनाव दिल की सेहत पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

अनियमित दिनचर्यादृ देर रात तक जागना, कम नींद और अनियमित भोजन हृदय को कमजोर बनाता है।

गलत खान–पान – फास्ट फूड, अत्यधिक तला–भुना, ज्यादा नमक और चीनी हृदय धमनियों में रुकावट पैदा कर सकते हैं।

शारीरिक गतिविधि की कमी – घंटों बैठकर काम करना और व्यायाम न करना हार्ट अटैक के खतरे को बढ़ाता है।

धूम्रपान व शराब – ये आदतें रक्त प्रवाह को प्रभावित कर हृदय को नुकसान पहुँचाती हैं।

विशेषज्ञ मानते हैं कि हृदय रोग केवल शारीरिक समस्या नहीं बल्कि इसका सीधा संबंध मानसिक और भावनात्मक स्थिति से भी होता है। लंबे समय तक दबी हुई चिंता, क्रोध और भय शरीर के अंदर नकारात्मक प्रभाव छोड़ते हैं, जो धीरे–धीरे गंभीर रोग का रूप ले सकते हैं।

आवश्यक सावधानियाँ

मानसिक संतुलन बनाए रखें।

प्रतिदिन ध्यान या गहरी सांस के अभ्यास करें। नकारात्मक सोच और अत्यधिक चिंता से दूरी बनाएं। और सबसे महत्वपूर्ण है कि काम और निजी जीवन में संतुलन रखें। इसके साथ ही अनुशासित दिनचर्या अपनाएं तथा समय पर सोने और जागने की आदत डालें। 7 – 8 घंटे की नींद अवश्य लें। भोजन के समय में नियमितता आवश्यक है। इसके अलावा संतुलित और प्राकृतिक आहार यथा ताजे फल, हरी सब्जियाँ और हल्का भोजन लें। हम सबको कम नमक, कम तेल और कम चीनी लेना चाहिए। देर रात भारी भोजन से परहेज करना चाहिए। लंबे समय तक लगातार बैठने से बचें।

नियमित स्वास्थ्य जांच

समय–समय पर रक्तचाप, शुगर, कोलेस्ट्रॉल की जांच बेहद जरूरी है। भले ही कोई लक्षण दिखाई दें या नहीं। कभी भी आपात स्थिति को हल्के में न लें।

सीने में तेज दर्द, सांस लेने में तकलीफ, पसीना आना, चक्कर या बाईं बाजू में दर्द जैसे लक्षण दिखें तो तुरंत चिकित्सा सहायता लेना आवश्यक है। भ्तपकलंहींज के मामलों में समय पर उपचार जीवन रक्षक साबित होता है।

ध्यान देने योग्य बातें...

हृदयाघात के बढ़ते मामले साफ संकेत देते हैं कि अब जीवनशैली में बदलाव कोई विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता है। संतुलित भोजन, मानसिक शांति, नियमित दिनचर्या और समय पर इलाज ही हृदय को स्वस्थ रखने का सबसे प्रभावी तरीका है।

(पत्रकार दीपशिखा के वार्ता पर आधारित)

महाशिवरात्रि का धर्मशास्त्र

परिपूर्ण पवित्रता, परिपूर्ण ज्ञान, परिपूर्ण साधना ये तीनों गुण जिनमें विद्यमान हैं, वे महादेव हैं। इस वर्ष 15 फरवरी के दिन महाशिवरात्रि है। महाशिवरात्रि का व्रत फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी की तिथि के दिन करते हैं। यह भगवान शिवजी का व्रत है। भगवान शिव सहजता से प्रसन्न होने वाले देवता हैं। इस कारण पृथ्वी पर शिवजी के भक्त विशाल संख्या में हैं। महाशिवरात्रि के दिन शिवतत्व अन्य दिनों की तुलना में १००० गुना अधिक कार्यरत रहता है। शिवतत्व का अधिकाधिक लाभ लेने के लिए महाशिवरात्रि को शिव की भावपूर्ण पद्धति से पूजा अर्चना करने के साथ 'ॐ नमः शिवाय।' यह नामजप अधिकाधिक करना चाहिए।

महाशिवरात्रि का महत्त्व क्या है?

महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव जितना समय विश्राम करते हैं, उस काल को 'प्रदोष' अथवा 'निषिथकाल' कहते है। पृथ्वी का एक वर्ष स्वर्गलोक का एक दिन होता है। पृथ्वी स्थूल है। स्थूल की गति अल्प होती है अर्थात स्थूल को ब्रह्मांड में यात्रा करने के लिए अधिक समय लगता है। देवता सूक्ष्म होते हैं, इसलिए उनकी गति अधिक होती है। यही कारण है कि, पृथ्वी एवं देवताओं के कालमान में एक वर्ष का अंतर होता है। पृथ्वी पर यह काल सर्वसामान्यतः एक से डेढ घंटे का होता है। इस समय भगवान शिव ध्यानावस्था से समाधि–अवस्था में जाते हैं। इस काल में किसा भी मार्ग से, ज्ञान न होते हुए, जाने–अनजाने में उपासना होने पर भी अथवा उपासना में कोई दोष अथवा त्रुटी भी रह जाए, तो भी उपासना का १०० प्रतिशत लाभ होता है। इस दिन शिव–तत्त्व अन्य दिनों की तुलना में एक सहस्र गुना अधिक कार्यरत होता है। इस दिन की गई भगवान शिव की उपासना से शिव–तत्त्व अधिक मात्रा में ग्रहण होता है। शिव–तत्त्व के कारण अनिष्ट शक्तियों से हमारी रक्षा होती है।

महाशिवरात्रि व्रत विधि कैसे करें?

संपूर्ण देश में महाशिवरात्रि बडे उत्साह से मनाई जाती है। उपवास, पूजा और जागरण महाशिवरात्रि व्रत के 3 अंग हैं। इस दिन षोडशोपचार पूजन करें। भवभवानीप्रित्यर्थ तर्पण करें। भगवान शिव को एक सौ आठ कमल अथवा बिल्वपत्र नाम मंत्र सहित चढाएं। तत्पश्चात पुष्पांजली अर्पण कर अर्घ्य दें। पूजा समर्पण, स्तोत्र पाठ और मूलमंत्र का जप होने के उपरांत भगवान शिव के मस्तक पर चढाया हुआ एक फूल उठाकर स्वयं के मस्तक पर रखें और क्षमायाचना करें', ऐसा महाशिवरात्रि का व्रत है।

इस दिन शिवपिंडी का अभिषेक करें। महाशिवरात्रि पर कार्यरत शिव–तत्त्व का अधिकाधिक लाभ लेने हेतु शिवभक्त शिवपिंडी पर अभिषेक करते है। शिवपिंडी को हल्दी–कुमकुम की अपेक्षा भस्म लगाएं।

किसी भी देवतापूजन में मूर्ति को स्नान कराने के उपरांत हल्दी–कुमकुम चढाया जाता है। परंतु शिवजी की पिंडी की पूजा में हल्दी एवं कुमकुम निषिद्ध माना गया है। हल्दी मिट्टी में उगती है। यह उत्पत्ति का प्रतीक है। कुमकुम भी उत्पत्ति का ही प्रतीक है। शिवजी 'लय' के देवता हैं, इसीलिए 'उत्पत्ति' के प्रतीक हल्दी–कुमकुम का प्रयोग शिव पूजन में नहीं किया जाता। शिवपिंडी पर भस्म लगाते हैं, क्योंकि वह लय का प्रतीक है। पिंडी के दर्शनीय भाग से भस्म की तीन समांतर धारियां बनाते हैं। उन पर मध्य में एक वृत्त बनाते हैं, जिसे शिवाक्ष कहते हैं।

शिव पूजन करते समय शिवपिंडी पर श्वेत अक्षत अर्पण करें। श्वेत अक्षत वैराग्य के, अर्थात निष्काम साधना के द्योतक हैं। भगवान शिव को श्वेत पुष्प अर्पण करें – भगवान शिव को श्वेत रंग के पुष्प ही चढाएं। उनमें रजनीगंधा, जुही, बेला जैसे पुष्प अवश्य हों। ये पुष्प दस अथवा दस की गुना में हों। तथा इन पुष्पों को चढाते समय उनका डंठल शिवजी की ओर रखकर चढाएं । पुष्पों में धतूरा, श्वेत कमल, श्वेत कनेर, आदि पुष्पों का चयन भी कर सकते हैं।

भगवान शिव का प्रिय बेल पत्र चढाएं– इस कालावधि में शिव–तत्त्व अधिक से अधिक आकृष्ट करनेवाले बेल पत्र, श्वेत पुष्प इत्यादि शिवपिंडी पर चढाए जाते हैं। बेल पत्र से वातावरण में विद्यमान शिव–तत्त्व आकृष्ट किया जाता है। भगवान शिव के नाम का जाप करते हुए अथवा उनका एक–एक नाम लेते हुए शिवपिंडी पर बेल पत्र अर्पण करने को बिल्वार्चन कहते हैं। इस विधि में शिवपिंडी को बेल पत्रोंसे संपूर्ण आच्छादित करते हैं। बेल पत्र से वातावरण में विद्यमान शिव–तत्त्व आकृष्ट किया जाता है। भगवान शिव के नाम का जाप करते हुए अथवा उनका एक–एक नाम लेते हुए शिवपिंडी पर बेल पत्र अर्पण करने को बिल्वार्चन कहते हैं। इस विधि में शिवपिंडी को बेल पत्रों से संपूर्ण आच्छादित करते है।

शिवपिंडी पर बेल पत्र चढाने तथा बेल पत्र तोडने का नियम

बेल के वृक्ष में देवता निवास करते हैं। इस कारण बेल वृक्ष के प्रति कृतज्ञता का भाव रख कर उससे मन ही मन प्रार्थना करने के उपरांत उससे बेल पत्र तोडना आरंभ करना चाहिए। शिवपिंडी की पूजा के समय बेल पत्र को औंधे रख एवं उसके डंठल को अपनी ओर कर पिंडी पर चढाते हैं। शिवपिंडी पर बेल पत्र को औंधे चढाने से उससे निर्गुण स्तर के स्पंदन अधिक प्रक्षेपित होते हैं। इसलिए बेल पत्र से श्रद्धालु को अधिक लाभ मिलता है।

भगवान शिव के मंदिर में ऐसे करें शिवपिंडी के दर्शन!

शिवालय में प्रवेश करते ही हमें पहले दर्शन होते हैं, नंदी के । शिवजी के दर्शन से पूर्व नंदी के दर्शन किए जाते हैं। उसके उपरांत शृंगदर्शन अर्थात नंदी के सींगों के बीच से शिवपिंडी के दर्शन किए जाते हैं। वृषभ रूप में नंदी शिवजी का वाहन है। नंदी शिवजी के सामने लीनभाव से बैठे रहते हैं। वह शिवजी का परमभक्त हैं। उससे हमें लीनता से ईश्वर के चरणों में पडे रहने की सीख मिलती है। शिवजी के मंदिर में प्रवेश करनेपर प्रथम नंदी के दर्शन करनेसे हममें भी लीनता निर्माण होती है।

भगवान शिव की परिक्रमा कैसे करें?

शिवपिंडी को देखते हुए, उसके सामने खडे रहने पर हमारी दाईं ओर अभिषेक का जल जाने के लिए बनाई गई जलप्रणालिका होती है । परिक्रमा का मार्ग यहां से प्रारंभ होता है । हमारी बाईं ओर से आरंभ कर जलप्रणालिका के दूसरे छोर तक जाना हैं (घडी की दिशा में) । फिर बिना जलप्रणालिका को लांघते, मुडकर पुनः जलप्रणालिका के प्रथम छोर तक आना हैं । ऐसा करने से एक परिक्रमा पूर्ण होती है । यह नियम केवल मानव–स्थापित अथवा मानव–निर्मित शिवलिंग के लिए ही लागू होता हैय स्वयंभू लिंग या चल अर्थात पूजाघर में स्थापित लिंग के लिए नहीं ।

नाम के पार्श्व में छुपा होता हैं गांवों का इतिहास

सारण के दो गांव कोपा और अनवल

हर गांव अपने नाम के साथ एक इतिहास लेकर चलता है, जिसे उस क्षेत्र के हर नागरिकों को जानने की आवश्यकता है। सारण अपने आप में ऐतिहासिक है। यह बौद्धकाल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।

सारण जिले का 'कोपा' अपने आप में नगर पंचायत है। यह गांव राष्ट्रीय उच्च पथ की संख्या 531 पर छपरा शहर से पश्चिम लगभग बारह किलोमीटर दुर्ग पर अवस्थित है। नगर पंचायत के अतिरिक्त यह थाना और रेल की भी सुविधा से भी जुड़ा है।

सामान्य दृष्टि से अगर विचार करें तो इस 'कोपा' का कोई भी अर्थ नजर में नहीं आता। शाब्दिक शल्य क्रिया के बाद या तो कोप होगा,कूप होगा, जो अर्थपूर्ण तो दिखते हैं पर यहां के लिए अप्रासंगिक है। भौगोलिक दृष्टि से लगभग छः–सात किलोमीटर दक्षिण रिविलगंज है,जहां पर सरयू नदी बहतीं है। यह अलग बात है कि इसकी चौहद्दी के आसपास बसे गांव, जो पंचायत के अधीन हैं, वहां भी कोई विशेष विकास नहीं दिखता।

इस 'कोपा' के इतिहास की जानकारी के लिए जब पुस्तकों का अध्ययन किया गया तो बहुत ही समृद्ध और अनूठा सा वर्णन मिला। यह क्षेत्र शत–प्रतिशत बुद्ध के काल से जुड़ा है। बुद्ध काल

के गणतंत्रों के मध्य भी खींचा–तानी थी। सारण का पूर्वी हिस्सा, जो 'मही' नदी तक सीमित था,मल्ल गणराज्य में था। इसके पूर्वोत्तर में लिच्छवी थे, जिसे 'वज्जी संघ' भी कहा जाता था। दक्षिण पूर्व में मगध का साम्राज्य था। इस क्षेत्र को तात्कालिक षड़यंत्र के कारण हाशिए पर रख पदिया गया,जब कि इस से संबंधित सभी ग्रंथ कह रहें हैं आज भी कि यह स्थान बौद्धकालीन है।

अल्लकप्प–एक स्थान विशेष है,जो बुद्ध काल का एक महत्वपूर्ण स्थान है और यह वही 'अल्लकप्प' है, जो वर्तमान में अपभ्रंश से 'अनवल' और 'कोपा' शब्द से ज्ञात है।

ग्रंथ बताते हैं–'कोपा' में एक टीला है, जो बुलियों द्वारा बनवाया गया बुद्ध का ही चैत्य है। जैसे ही सड़क छोड़ इस के बाजार में प्रवेश करेंगे तो यह टीला दिखेगा। आज यह एक औघड़ स्थान है। उस समय 'बुली' एक जाति थी व तब इस क्षेत्र में यही क्षत्रिय जाति निवास करती थी। हालांकि आज भी इस टीले के कागजात किसी राजघराने के नाम ही से पंजीकृत है।

'अनवल' इस से सटा हुआ पंचायत है। अस्सी के दशक में इसी गांव के एक टोले–बेंलवा टोला–में एक नहर की खुदाई के क्रम में यहां बुद्ध की मूर्ति भी मिली। इसके महत्व को समझते हुए तब यहां के अधिकारियों ने इस मूर्ति को संग्रहालय में रखने के लिए पटना भेज दिया था और इसे आज भी वहां देखा जा सकता है।

हिंदू लड़की उठाएंगे और जबरन निकाह भी करेंगे

यह मामला दरभंगा के कमतौल थाना क्षेत्र का है। यहां के मो. सितारे ने 28 जनवरी को एक नाबालिग लड़की का अपहरण कर लिया। और अब वह खुलेआम धमकी दे रहा है कि वह हिंदू लड़की से धर्म परिवर्तन कर जबरन निकाह करेगा। आरोपी ने अपहरण से पहले धमकी दी थी कि गांव में वे लोग एक हजार परिवार हैं जबकि हिन्दू सिर्फ 4 परिवार। अल्पसंख्यक हिंदू उनका कुछ नहीं कर सकते। आरोपी पहले से शादीशुदा है और दो बच्चों का बाप भी है।

नाबालिग का एक रिश्तेदार सड़क हादसे में 28 जनवरी को घायल हो गया था। पीड़िता के परिवार वाले उसे देखने के लिए गए हुए थे। नाबालिग घर में अकेली थी। शाम 5 बजे किराने की दुकान पर कुछ सामान लाने गई थी। दुकान घर के बगल में ही था, इसलिए घर खुला छोड़ दिया था। 2 घंटे के बाद परिजन घर लौटे तो उनलोगों ने देखा कि नाबालिग घर में नहीं थी।

पहले तो उनलोगों ने सोचा कि बगल में ही गई होगी, पर काफी देर बाद भी नहीं पहुंची तो परिजन घर के बाहर खोजबीन के लिए निकले। पास के दुकानदार ने बताया कि दुकान पर बेटी आई थी, उसके बाद वो कहां गई पता नहीं।

नाबालिग के परिजन 28 जनवरी से लेकर 4 फरवरी तक अपनी बेटी की खोजबीन करते रहे, उसका कहीं कुछ पता नहीं चल रहा था। मां–पिता काफी परेशान थे कि अब क्या करें, कहां उसे खोजे। खोजबीन के दौरान एक ग्रामीण से पता उन्हें पता चला कि मो सितारे उसे उठा ले गया है। बाइक से उसे अपने साथ ले गया है।

मो. सितारे का घर नाबालिग के घर से 400 मीटर की दूरी पर है। परिजन सितारे के घर पर गए। वहां उसके पिता जमाहिर नदाफ, शकीला खातून सहित अन्य लोग थे। उनलोगों ने बच्ची को वापस करने के लिए कहा, पर आरोपी के परिजनों धक्का–मुक्की शुरू कर दी और कहा कि हम लड़की को वापस नहीं करेंगे। जो करना है, कर लो। उनलोगों ने पीड़ित परिवार को धक्के मारकर भगा दिया। जिसके बाद 5 फरवरी को पीड़ित परिवार ने प्राथमिकी दर्ज कराई।

पीड़ित परिवार के अनुसार मो. सितारे ने पिछले साल 4 सितंबर को हथियार के साथ उनके घर पहुंचा था। हथियार दिखाकर घर में लूटपाट की थी। नाबालिग के पिता ने कहा, ष्जेल से छूटने के बाद मो. सितारे लगातार हमें प्रताड़ित कर रहा था। वो कहता था कि तुमलोगों ने मेरे खिलाफ केस क्यों किया? तुम्हारे घर की बहू–बेटियों को उठा ले जाएंगे।

आरोपी ने ये भी कहा कि तेरी बेटी का धर्म बदलेंगे तो हमें शबाब मिलेगा, जन्नत मिलेगी। हम हिंदू इस गांव में अल्पसंख्यक हैं, इसलिए ये लोग मनमानी करते हैं।

इस मामले में एसडीपीओ सदर–2 एस के सुमन ने बताया, ष्आरोपी और उसके परिजन घर छोड़कर फरार हैं। आरोपी पहले से शादीशुदा है और उसका मोबाइल फोन स्विच ऑफ होने के कारण लोकेशन ट्रेस नहीं हो पा रहा है।

पुलिस लगातार संभावित ठिकानों पर छापेमारी कर रही है और जल्द ही नाबालिग लड़की को बरामद कर लिया जाएगा। आरोपी की गिरफ्तारी के लिए न्यायालय से वारंट जारी कर दिया गया है।

बिहार की 3 विभूतियों को मिला पद्मश्री सम्मान

इस वर्ष भरत सिंह भारती, स्व. विश्वबंधु (मरणोपरांत) और डॉ. गोपाल जी त्रिवेदी को कला, संस्कृति और कृषि क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान के लिए यह प्रतिष्ठित पुरस्कार दिया गया है।

2026 के पद्मश्री प्राप्तकर्ता :

1. भरत सिंह भारतीः इन्होंने न केवल पारंपरिक धुनों को सहेजा, बल्कि उन्हें वैश्विक मंच पर एक नई पहचान भी दिलाई। भारत सरकार ने भरत सिंह भारती को लोकगायन में समर्पण के लिए पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया है। सरकार ने उनके सात दशकों की अनवरत साधना और भोजपुरी लोक संस्कृति के प्रति उनके समर्पण का सम्मान दिया है। 20 नवंबर, 1936 को भोजपुर जिले के नोनऊर गांव में जन्मे भारती जी ने जब संगीत की शिक्षा लेनी शुरू की तब संसाधनों का अभाव था। लेकिन उनके भीतर लोक कला को लेकर एक गहरी तड़प थी। उनकी यात्रा 10 वर्ष की उम्र में गांव की कीर्तन मंडलियों से शुरू हुई थी। आगे चलकर उन्होंने आरा के प्रसिद्ध मृदंग वादक शत्रुंजय प्रसाद सिंह श्ललन जीश से तबला और गायन की विधिवत शिक्षा ली। संगीत के प्रति उनकी लगन ऐसी थी कि उन्होंने मगध विश्वविद्यालय से हिंदी में स्नातक करने के बावजूद कला को ही अपना जीवन बना लिया। उन्होंने एक शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं दीं और 1998 में सेवानिवृत हुए लेकिन उनका असली शिक्षण कार्य तो लोकगीतों के माध्यम से समाज को संस्कारित करना रहा है। वे न केवल एक उत्कृष्ट गायक हैं, बल्कि हारमोनियम, बांसुरी, सितार, तबला और ढोलक जैसे वाद्य यंत्रों पर भी समान पकड़ रखते हैं। उन्होंने लगभग 20 वर्षों तक तबला बजाते हुए गायन की कठिन विधा को निभाया, जो संगीत जगत में विरले ही देखने को मिलता है। आकाशवाणी और दूरदर्शन के ग्रेड श्एश कलाकार भारती जी 89 वर्ष की उम्र में आज भी सक्रिय हैं।

2. **स्व. विश्वबंधु (मरणोपरांत)**: विश्वबंधु पटना के लोक नर्तक थे। इन्होंने श्सुरांगनश संस्था के माध्यम से विलुप्त होती लोक गाथाओं और डोमकच नृत्य को संरक्षित किया।

उन्होंने न सिर्फ डोमकच नृत्य को लोकप्रिय बनाया बल्कि ग्रामीण समुदाय को इसके बारे में शिक्षित किया।

विश्व बंधु मूल रूप से बिहार पटना के रहने वाले थे। उन्होंने देश भर में 6 हजार से ज्यादा कार्यक्रमों में प्रदर्शन किया था। उन्होंने हजारों नर्तकों को प्रशिक्षित भी किया था। उन्होंने 95 वर्ष की आयु में दिल्ली के एक अस्पताल में 30 मार्च, 2025 को अंतिम सांस ली थी।

3. डॉ. गोपाल जी त्रिवेदीः

प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक और बागवानी विशेषज्ञ गोपालजी त्रिवेदी को कृषि के क्षेत्र में उनके क्रांतिकारी योगदान के लिए इस वर्ष का पद्मश्री सम्मान प्रदान किया गया है। वे बिहार के उन दूरदर्शी विशेषज्ञों में शुमार हैं, जिन्होंने पारंपरिक खेती को आधुनिक और वैज्ञानिक आधार दिया। डॉ. त्रिवेदी को मुख्य रूप से लीची के पुराने बगीचों में श्कैनोपी मैनेजमेंटश (त्मरनअमदंजपवद ब्ंदवचल डंदंहमउमदज) की तकनीक को अपनाने और उसे लोकप्रिय बनाने वाले पहले वैज्ञानिकों में गिना जाता है। उनके इस प्रयास से पुराने पेड़ों की उत्पादकता में भारी सुधार हुआ। उनके प्रयासों ने न केवल लीची किसानों की आय को दोगुना किया, बल्कि उन्होंने राज्य में जल जमाव वाले क्षेत्रों के सदुपयोग के लिए किसानों को मखाना और सिंघाड़े की व्यावसायिक खेती के प्रति भी प्रोत्साहित किया। इसके अतिरिक्त, बिहार में शीतकालीन मक्का (पदजमत डंप्रम) की खेती को बढ़ावा देने में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है, जिससे बिहार आज मक्का उत्पादन में देश का अग्रणी राज्य बनकर उभरा है। उनका यह सम्मान बिहार की कृषि क्रांति और उन्नत किसान नेतृत्व की एक बड़ी जीत है। डॉ त्रिवेदी लोकनायक जयप्रकाश नारायण और नानाजी देशमुख के साथ भी जुड़े रहे हैं।

RNI No.-BIHHIN/2003/12538 Postal Reg:R-10/NP-39/Patna GPO/26-28

बिहार में हिन्दू सम्मेलन

'संवाद दर्शन' के विशेषांक का विमोचन करते रा.स्व. संघ के सह सरकार्यवाह मा. आलोक कुमार जी

डाक टिकट

पता